श्री राधा नाम माहात्म्यं

*डॉ. भास्कर शर्मा

शोध सारांश –

श्री राधिका जी श्रीकृष्ण की ह्लादिनी शक्ति है। स्वरूप शक्ति के तीन प्रभाव हैं, ह्लादिनी, संवित् और सन्धिनी।

राधा स्वयं श्रीकृष्ण को अतिशय आनंद प्रदान करती है। राधा का उद्भव और भक्ति का प्रारम्भ भागवत पुराण से ही माना जाता है। वैवर्त पुराण में राधा नाम तथा उनकी लीलाओं का वर्णन है। पद्मपुराण में भी राधा नाम की चर्चा है। ज्योतिषीय राधा शब्द का भी पौराणिक राधा से सम्बन्ध है। संस्कृत साहित्य में भी राधा–कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है।

मुख्य शब्द – राधा, कृष्ण, लीला, रास, गोपिका, पुराण, साहित्य आराधन।

प्रस्तावना –

भारतीय चिन्तकों की यही परम्परा रही कि साधनात्मक क्षेत्र में उन्होंने सावकों की जन्मतिथि, स्थान, जाति आदि से उदासीन होकर उनकी साधना–पद्धति का ही वर्णन किया है। पुराणों का रचना–काल शक–संवत्, विक्रम–संवत् या ईस्वी–सन् की तरह नही थी, थी भी तो उसकी अवधि इतनी सुदीर्घकालीन थी और आज भी है, जिसमें निश्चित रूप से किसी व्यक्ति के कालक्रम का पता लगाना अत्यंत कठिन है। मन्वन्तर इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। अवश्य ही ज्योतिष की गणितीय परिगणना इस संबंध में कुछ सफल प्रयास रही है। इसलिए पुरावादिकों के रचना काल के संबंध में भी सबका मतैक्य नहीं है। पुराणों में श्रीमद् भागवतपुराण सबसे प्राचीनतम तथा प्रामाणिक पुराण है। यह महाभारत काल की ही रचना मानी जाती है, जो कृष्ण के समकालीन थे। यह महाभारत के रासपंचाध्यायी में एक प्रिय गोपी का वर्णन मिलता है। रामलीला में अन्तर्धान हुए श्रीकृष्ण को खोजती हुई गोपियाँ उनके चरण–चिहनों को देखकर कहती है – ओह! जैसे हथिनी अपने प्रियतम गजराज के साथ जाती हो और गजराज उस हथिनी के कंधे पर अपनी सूँड़ रख दे और दोनों मिलकर चलें, वैसे ही अपने कंधे पर श्रीश्यामसुन्दर की भुजा को धारण किए हुए उनके साथ–साथ चलने वाली किस सौभाग्यवती ब्रज–सुन्दरी के ये दूसरे चरण चिहन है।[1] निश्चय ही यह हम लोगों का मन हरण करने वाले सर्वशक्तिमान श्रीकृष्ण की अराधना करने वाली उनसे प्रेम करने वाली आराधिका होगी। उस चरण प्रेम के फलस्वरूप ही रीझकर गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र इस बड़भागिनी को एकांत में ले गए है और हम लोगों को वन में छोड़ दिया है।[2] इसी आराधितो पद से राधा शब्द की व्युत्पत्ति बताई गई है। क्योंकि, परवर्ती राधोपनिषद् इसकी व्याख्या इसी तरह करती है– कृष्ण इनकी आराधना करते है अथवा वे सर्वदा कृष्ण की आराधना करती है, इसलिए ये राधा कहलाती हैं।[3] श्रीराधिका गोपियों में सर्वश्रेष्ठ तथा महाभावरूपा है। प्रेम की अतिशयता गोप्य होती है। शायद इसीलिए वेदव्यास ने इनका नाम भी संकेत से ही कहा है। परवती विद्वान विश्वनाथ चक्रवर्ती ने इसकी व्याख्या में ..... 'नून हरिरयं राधिताह राधां इत्येह प्रपिताहं' लिखकर राधा से इनका संबंध जोड़ा है। कृष्णदास कविराज की इसका समर्थन करते है।[4] अंग्रेज विद्वान जे.एन. फर्कुहार ने भी राधा का उद्भव और राधा–भक्ति का प्रारंभ भागवतपुराण से ही माना है।[5]

परवर्ती पुराणों में विष्णुपुराण, वाराहपुराण, देवीभागवत पुराण तथा ब्रह्मसंवर्तपुराणों में राधा शब्द दिखाई पड़ता है।

परन्तु सबमें एक समान वर्णन नही है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में 'राधा' नाम तथा उनकी लीलाओं का वर्णन विस्तारपूर्वक हुआ है। हरिवंशपुराण महाभारत का अंग माना जाता है। इसमें श्रीकृष्ण श्रृंगारपूर्वक वृन्दावन की लीलाओं का वर्णन तो है, परंतु युगल भाव का वर्णन दिखाई नहीं पड़ता।

विष्णुपुराण के अठाइसवे अध्याय के रासलीला प्रसंग मेंराधा का स्पष्ट उल्लेख नही हुआ है। लेकिन, यहां भी 'राधा' के संबंध में संकेत से ही बात विष्णुपुराण में राधा नाम– कही गई है।

अत्रोपविश्य सा तेन कापि पुष्पैरलङ् कृता।

अन्य जन्मनि सर्वात्मा विष्णुरम्यचितो यथा।।

अर्थात्, यहां बैठकर कोई रमणी उस कृष्णा द्वारा पुष्पों से अलंकृता हुई है, जिस रमणी के द्वारा दूसरे जन्म में सर्वात्मा विष्णु अभ्यर्चित हुए है। यहां 'राधित' या 'आराधित' शब्द 'अभ्यर्चित' शब्द का प्रयोग हुआ है।

पद्मपुराण में एक–दो स्थलों 'राधा' नाम की चर्चा की गई है। श्री रूपगोस्वामी ने अपने 'उज्ज्वलनीलमणि' ग्रंथ में और कृष्णदास कविराज ने अपने 'चैतन्यचरिता–मृत' में पद्मपुराण से राधा नाम का उल्लेख उद्धृत किया है। इसी पुराण में 'राधिका' की जयंती 'राधाष्टमी' का वर्णन महात्म्य सहित मिलता है[6], जिस व्रत के करने से विविध पातको से मुक्ति की चर्चा की गई है। वृन्दावन में बालकृष्ण को देखकर नारद ने उन्हें साक्षात भगवान का अवतार समझ लिया और सोचा कि लक्ष्मी देवी अवश्य ही किसी गोप के घर अवतीर्ण है। ढूढ़ते हुए भानु नामक गोपवर्ण के घर में सुलक्षणा गौरी कन्या को देखकर वे समझ गए कि ये ही कृष्ण वल्लभा लक्ष्मी की अवतार है, ये माहेश्वरी, रमा, आद्याशक्ति, मूल प्रकृति, इच्छा ज्ञान क्रिया शक्ति है।[7] इस संबंध में श्रीशशिभूषणदास गुप्त ने क्षेपक कहकर शंका व्यक्त की है। परंतु इनका अनुमान स्वयं निर्देष नही है।

मत्स्यपुराण में भी इसका बहुत ही अल्प वर्णन हुआ है। इसमें कहा गया है कि रूक्मिणी द्वारावती में है, और राधा है वृन्दावन के वन में।[8] इस तरह उपर्युक्त पुराणों में विशेषतः वायुपुराण, वाराहपुराण, मत्स्य–पुराण, नारदीयपुराण आदि पुराणों में राधा–वर्णन की स्वल्पता का प्रमुख कारण है उनका विष्णु के अन्य रूपों का प्रतिपादन करना। इन पुराणों के नामों से ही यह स्पष्ट हो जाता है।

संस्कृत–साहित्य में भी राधा–कृष्ण की लीलाओं का वर्णन पर्याप्त रूप में मिलता है। संस्कृत की साहित्यिक रचनाओं के पूर्व ही श्रीमद्भागवत को मानना उचित होगा, क्योंकि राधाकृष्ण की भक्ति का प्रचार साहित्य द्वारा नहीं, बल्कि पुराणों द्वारा हुआ था। और, सभी पुराणों को प्राचीनतम न भी माना जाए, तो भी श्रीमद् भगवत और पद्मपुराण को तो प्राचीनतम मानना ही होगा। अतः पुराणों से पूर्व साहित्यिक ग्रंथों में राधा–कृष्ण की लीलाओं का वर्णन मिलता है, कहना युक्ति–संगत नही होगा। अवश्य ही, परवर्ती संस्कृत–साहित्य में राधा–कृष्ण की लीलाओं का वर्णन पर्याप्त रूप में दिखाई पड़ता है। बाद में हिन्दी के भक्त कवियों ने भी इसका वर्णन अपनी रचनाओं में किया है।

श्रीमत्परमहंस स्वामी हरिहरानन्दजी (श्रीकरपात्रीजी महाराज) ने यही कहा है ''किन्तु सभी गोपांगनाएं एक–सी अधिकारिणो नहीं थीं उनमें जो भगवान् की आह्लादिनी शक्तिरुपा की नित्य सहचरी है।

जिस प्रकार अमृतमय समुद्र में माधुर्य होता है, उसी प्रकार भगवान् के साथ उनका अभेद हो है। श्रीराधो पनिषद् में लिखा है– भगवान् हरि श्रीकृष्ण ही परम देव है। वे छहीं ऐश्वयों से पूर्ण भगवान गोप और गोपियों के सेव्य, श्रीवृन्दा (तुलसी) देवी से आरावित और श्रीवृन्दावन के अधीश्वर हैं। के हो एकमात्र सर्वेश्वर है। उन्हों श्रीहरि के एक रूप नारायण भी हैं, जो कि

श्रीराघोपनिषद् में ब्रह्माण्डों के अधीश्वर हैं। वे श्रीकृष्ण प्रकृति से श्रीराधिका का स्वरूप भी पुरातन और नित्य हैं। उनकी आहलादिनी,

श्रीराधिकाजी ब्रह्म की श्रीवृषभानुनन्दिनी और उनकी सहचरी सविता, विशाला आदि हैं, वे तो नित्य सिद्धा है। वे तो भगवान् सन्धिनी, ज्ञान, इच्छा और क्रिया आदि बहुत–सी शक्तियां हैं । उनमें आह्लादिनी सर्वप्रधान है। ये ही परम अन्तरंगभूता राधा है। श्रीकृष्ण इनकी आराधना करते हैं. इसलिए वे राधा है। अथवा ये सर्वदा श्रीकृष्ण की आराधना करती है, इसलिए 'राधिका' कहलाती हैं। श्रीराधा को श्गान्धर्वा भी कहते हैं। ब्रज की गोपांगनाएं, द्वारका की समस्त श्रीकृष्ण महिषियों और श्रीलक्ष्मीजी इन्हीं श्रीराधिकाजी की कायव्यूह (अंशरूपा) हैं। ये राधा और श्रीकृष्ण रस सागर एक होते हुए ही शरीर से क्रीड़ा के लिए दो हो गए हैं। ये श्रीराधिकाजी भगवान् हरि की सर्वेश्वरी, सम्पूर्ण सनातनी विद्या है और श्रीकृष्ण के प्राणों की अधिष्ठात्री देवी हैं। वेद एकान्त में इनकी ऐसी ही स्तुति किया करते हैं।

वैष्णव पुराणों में ब्रह्मवैवर्त पुराण में श्रीकृष्णलीला वर्णन में श्रीमद् भागवत पुराण के बाद आता है। इसमें राधाकृष्ण की लीलाओं का विशद वर्णन दिखाई पड़ता है। ब्रह्म खंड के पंचम अध्याय में राधा की उत्पत्ति गोलोक में श्रीकृष्ण के वाम पार्श्व से हुई है–'वहाँ श्रीकृष्ण के ब्रह्मवैवत्तंपुराण में राधा बाम पार्श्व से एक कन्या प्रकट हुई, जिसने दौड़कर फूल ले आकर उन भगवान् के चरणों में अर्ध्य प्रदान किया। उसके अंग अत्यन्त कोमल थे।

वह मनोहारिणी और सुन्दरियों में सुन्दर थी। उसके सुन्दर एवं अरुण ओष्ठ और अक्षर अपनी लालिमा मे बन्धुजीव पुष्प (दुपहरिये के फूल) की शोभा को पराजित कर रहे थे। ''इसी क्रम में श्रीराधा से अनेक गोपांगनाओं के प्राकट्य का वर्णन मिलता है। पुनः श्रीकृष्ण के रोमकूपों से भी अनेक गोप तथा गौएँ प्रकट हुई। गोलोक में प्रकट श्रीराधा का ब्रज में उत्पन्न होने का कारण

श्रीदामा का शाप बताया गया है श्रीमद्भागवत महापुराण में राधा कृष्ण के विवाह की चर्चा हुई है लेकिन ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा और कृष्ण के विवाह का बहुत सुंदर वर्णन हुआ है और बताया गया है कि राधा की छाया के साथ रायाण गोप का विवाह हुआ, जो अलौकिक महत्व रखता है।

ज्योतिष में अनुराधा, विशाखा आदि नामों के द्वारा राधा शब्द का सामने दिखाकर सौर मंडल से संबद्ध रूपक स्थापित किया गया है वह केवल बुद्धि का विलास मात्र है। अनुराधा और विशाखा आदि शब्दों से पौराणिक राधा का संबंध नहीं हो सकता। पुराण कारों को ज्योतिष के अनुराधा का वर्णन कभी अभीष्ट नहीं था उनका तो संबंध 'अनयाराधितोनूनं' से ही हो सकता है।

ब्रह्म की जिस आदि शक्ति का वर्णन वेदों ,उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रंथों, पांच रात्रों, और विविध आर्ष ग्रन्थों में पाते हैं, उसी का लीला हेतु प्रकट रूप वर्णन विष्णु पुराण में दिखाई देता है।

कृष्ण भक्ति का प्रचार पुराणों द्वारा ही उत्तर भारत से दक्षिण भारत में हुआ था। दक्षिण के सुप्रसिद्ध आलवर भक्तों की कृष्ण भक्ति का आधार श्रीमद्भागवत पुराण ही है। यह भक्त शिरोमणि रासलीला के रहस्य से परिचित होंगे। तमिल का कुर वैकुट्ट नृत्य रासलीला से समता रखता है। यह भक्त मधुर भावना के उपासक थे इन्हीं भक्तों ने 4000 पद श्री कृष्ण की लीला में गाय हैं श्री कृष्ण तथा एक प्रमुख गोपी का वर्णन है। उस गोपी का नाम ''नोप्पिनाई'' है, और इससे यह अनुमान किया जाता है कि वे प्रमुख गोपी राधा ही होगी।

शिलालेखों पर राधा कृष्ण की लीलाओं के किसी भी प्रकार के चित्र ईस्वी सन् से पूर्व के नहीं मिलते। ईसा की चौथी शताब्दी के शिलालेखों पर श्री कृष्ण लीला से संबंधित चित्र मिलते हैं जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि पुराणों द्वारा इन लीलाओं का पूर्ण प्रचार हो गया था।

निष्कर्ष –

इस प्रकार श्रीराधा नाम का माहात्म्य साहित्य, पुराणों में पर्याप्त रूप से प्राप्त है और वो माहात्म्य आनंद बरसाने वाला है।

***व्याख्याता**
सामान्य संस्कृत,
राजकीय आचार्य संस्कृत, महाविद्यालय
भरतपुर, (राज.)

संदर्भ –

1. कस्याः पदानि चैतानि याताया नन्दसूनूना।
   बंलन्यतनप्रकोष्ठायाः करेणोः किाणा यदा।। (श्रीमदभगवत पु., 10.30.27)
2. अनयाराधियो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः।
   यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः।।
3. राधोपनिषद्।
4. कृष्ण वांछापूर्ति रूप करे आराधने।
   अतएव राधिका नाम पुराणे बाखाने।। आदि।
5. श्रीधरस्वामी ने इस श्लोक की टीका में कुछ भी नहीं लिखा है, लेकिन श्रीसनद गोस्वामी ने अपनी वैष्णवतोषिणी टीका में कहा है–
   (क) 'अनयैव आराधितः आराध्यवशीकृतः न त्वस्माभिः। राधापति आराधना राधेति नामकरण च दर्शितं।'
6. यथा राधा प्रिया विष्णोस्तस्याः कुण्डं प्रियं तथा।
   सर्वगोपीषु सेवको विष्णोरत्यन्तवल्लभ।।(पद्मपुराण)
7. राधा का कम–विकास : श्रीशशिभूषणदास गुप्त, षृ. 107
8. रूक्मिणी द्वारवत्या तु राधा वृन्दावने वने। (मत्स्यपुराण, 13/38)